षट्खंडागम पुस्तक-११ (फोल्डर नं. ००१४०५)

मुख्य टाइटल

विषयसूची

प्राक्कथन ---------- ६

विषय परिचय ---------- ७

विषय सूची ---------- १४

शुद्धिपत्र ---------- १९

मूल, अनुवाद और टिप्पण ---------- १-३६८

वेदनाक्षेत्रविधान ---------- १-७४

वेदनाक्षेत्रविधानमें ज्ञातव्य पदमीमांसा आदि ३.... ---------- १

क्षेत्रके सम्बन्धमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ---------- २

पदमीमांसा

पदमीमांसामे क्षेत्रकी अपेक्षा.... ---------- ३

शेष कर्मोंके उक्त पदोंका विचार ---------- ११

स्वामित्व

स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक... ---------- ११

जघन्य विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ---------- ११

उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ---------- १३

क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके... ---------- १४

क्षेत्रतः अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी... ---------- २३

अनुत्कृष्ट क्षेत्रविकल्पोंके स्वामियोंका... ---------- २७

दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायकी... ---------- २९

वेदनीय कर्मकी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके... ---------- ३०

वेदनीय कर्मके ही समान आयु, नाम और गोत्रकी उत्कृष्ट... ---------- ३३

वेदनीय सम्बन्धी अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके... ---------- ३६

अल्पबहुत्वप

अल्पबहुत्वप्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और... ---------- ५३

जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोसम्बन्धी.... ---------- ५३

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि... ---------- ५४

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा... ---------- ५५

मूल सूत्रोंद्वारा सब जीवोंमें अवगाहनाभेदोंके... ---------- ५६

एक सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा... ---------- ६९

संदृष्टिद्वारा अवगाहनाभेदोंके स्वामियोंका निर्देश ---------- ७१

वेदनाकालविधान ---------- ७५-३६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदनाकालविधानमें ज्ञातव्य ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख.... ७५
पदमीमांसा आदि उक्त ३ अनुयोगद्वारोंका नामोल्लेख ७७
पदमीमांसा
पदमीमांसामें कालकी अपेक्षा... ७८
शेष ७ कर्मोंकी कालवेदनाके उक्त १३ पदोंका विचार ८५
स्वामित्व
स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदवियक २ भेदोंका निर्देश ८५
जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ८५
उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ८६
कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा ८८
कालकी अपेक्षा अनेक भेदोंमें विभक्त.... ९१
प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा... १०८
ज्ञानावरणीयके ही समान शेष ६ कर्मोंकी... ११२
कालकी अपेक्षा आयुकर्म सम्बन्धी... ११६
कालकी अपेक्षा जघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाके... ११८
कालकी अपेक्षा अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदनाके... १२०
दर्शनावरणीय और अन्तराय..... १३२
कालकी अपेक्षा जघन्य वेदनीयवेदनाके स्वामीका निर्देश १३२
वेदनीयके अजघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा १३३
आयु, नाम और गोत्र सम्बन्धी जघन्य-अजघन्य... १३४
कालकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य मोहनीयेवनदाओंके... १३५
अल्पबहुत्व
अल्पबहुत्व प्ररूपणामें जघन्य... १३६
जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी जघन्य... १३७
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा.... १३७
जघन्य-उत्कृष्ट.... १३८
प्रथम चूलिका
मूलप्रकृति-स्थितिबनधकी.... १४०
स्थितिबन्धप्ररूपणा
चौदह जीवसमासोंमें.... १४२
इस अल्पबहुत्वद्वारा सूचित चार प्रकारके.... १४७
परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व १४८
स्वस्थान मूलप्रकृति अल्पबहुत्व १५०
चौदह जीवसमासोंमें आठ कर्मोंका परस्थान अल्पबहुत्व १५४
व्युत्पत्तिविशेषसे स्थितिबन्धस्थानका अर्थ.... १६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्ततु अल्पबहुत्व प्ररूपणामें स्वस्थान अव्वोगाढ़अल्पबहुत्व ---------- १६३
परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व ---------- १६४
स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ---------- १६६
परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ---------- १६९
उपर्युक्त दोनों अल्पबहुत्वदण्डकोंकी सम्मिलित... ---------- १७७
परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व ---------- १७९
स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ---------- १८२
परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ---------- १९०
चौदह जीवसमासोंमें संक्लेश.... ---------- २०५
जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व---------- २२५
निषेकप्ररूपणा
अनन्तरोपनिधा द्वारा पंचेन्द्रिय संज्ञी.... ---------- २३८
उपर्युक्त जीवोंमें मोहनीय कर्मकी निषेकरचनाका क्रम---------- २४२
पंचेन्द्रिय संज्ञी सम्यग्दृष्टि अथवा....---------- २४५
पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंमें.... ---------- २४६
पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्तोंमें..... ---------- २४७
पंचेंद्रियादिक अपर्याप्तों तथा सूक्ष्म.... ---------- २४८
पंचेन्द्रिय असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय..... ---------- २४९
उपर्युक्त जीवोंमें आयु कर्मकी निषेकरचनाका क्रम ---------- २५१
उपर्युक्त पर्याप्तोंमें तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय.... ---------- २५२
परम्परोपनिधाके द्वारा विविध जीवोंमें.... ---------- २५३
श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अवहार.... ---------- २५८
आबाधाकाण्डकप्ररूपणा
पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी आदि जीवोंमें... ---------- २६७
आयुकर्मसम्बन्धी आबाधाकाण्डकप्ररूपणा न करनेका कारण ---------- २६९
अल्पबहुत्व
पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि.... ---------- २७०
पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी... ---------- २७३
पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी.... ---------- २७५
पंचेन्द्रिय असंज्ञी आदि पर्याप्त-.... ---------- २७६
एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें.... ---------- २७८
श्री वीरसेन स्वामिके द्वारा प्रकृत अल्पबहुत्व.... ---------- २७९
परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा---------- २८७
प्रकृत अल्पबहुत्व सम्बन्धी विषम पदोंकी पंजिका---------- ३०३
द्वितीय चूलिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस चूलिकाके अन्तर्गत स्थितिबन्धाध्यवसायप्ररूणामें.... ----------३०८
प्रकृत चूलिकाकी अनावश्यकताविषयक शंका और उसका परिहार----------३०८
जीवसमुदाहार
ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके बन्धक... ----------३११
साताबन्धकोंके ३ भेद ----------३१२
असाताबन्धकोंके ३ भेद----------३१३
उक्त भेदोंमें सर्वविशुद्ध व संकिलितष्टतर...----------३१४
साताके चतुःस्थानबन्धकादिकोंमें तथा असाताके....----------३१६
ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके..... ---------- ३२०
ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोगके द्वारा बंधने योग्य स्थितियोंका उल्लेख----------३३२
छह यवोंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा----------३३४
साताके व असाताके चतुःस्थानादिबन्धकोंका अल्पबहुत्व----------३४१
प्रकृतिसमुदाहार
प्रकृतिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम....----------३४६
उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका अल्पबहुत्व----------३४७
स्थितिसमुदाहार
स्थितिसमुदाहारमें प्रगणना....----------३४९
प्रगणना द्वारा ज्ञानावरणीयादि....----------३५०
अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधाके द्वारा.....----------३५२
श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अवहार,.....---------- ३५८
अनुकृष्टि द्वारा उक्त स्थितिबन्धाध्यवसाय.....---------- ३६२
तीव्र-मन्दता द्वारा उपर्युक्त....----------३६६
परिशिष्ट
वेदनाक्षेत्रविधानका सूत्रपाठ----------१
वेदनाकालकाविधानका सूत्रपाठ----------४
अवतरण-गाथासूची---------- १५
ग्रन्थोल्लेख ---------- १५
पारिभाषिक शब्द-सूची---------- १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org